संस्कृत के इस मंत्र का हिन्दी में अर्थ है- हे भगवान, मुझे अंधेरे से उजाले की ओर ले चल.....

मनुष्य जीवन सार्थक तभी होता है, जब हम अज्ञान के अंधकार से निकलकर उजाले में प्रवेश करते हैं। तभी मनुष्य का असली जन्म होता है। परम पिता परमात्मा एक दिव्य ज्योति स्वरुप ही तो है। इस ज्योति स्वरुप परमात्मा को अपने हृदय के आंगन में जिसने देख लिया, उसका जीवन तो सफल हो ही गया। इस दिशा में हमारे कदम उठें और हम अपने जीवन से अंधकार एवं भ्रांतियाँ दूर करके कर्मठता के साथ अपने जीवन के लक्ष्य की ओर एक-एक कदम बढ़ाकर चलने लगे तो हमारा मानव जीवन सार्थक हो जाएगा।

तो आइये, सबसे पहले हम एक ऐसे शब्द से शुरुआत करते हैं, जिसकी हम सभी को चाहत होती है और उसका सभी लोग बेसब्री से इन्तजार करते हैं। वह महत्वपूर्ण शब्द है-होलीडे *(Holiday)*. यह निर्विवाद सत्य है कि सप्ताह में सात दिन होते हैं और दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं, सप्ताह में सात दिन ही रहेंगे। अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि के लोग शनिवार को सप्ताहांत अर्थात् सप्ताह का अंतिम दिन मानते हैं और रविवार को सप्ताह का प्रथम दिन। कैलेण्डर में भी सप्ताह रविवार (Sunday) से ही शुरु होता है, परन्तु भारतीय लोग सप्ताह की गणना सोमवार से शुरु करते हैं और रविवार को अन्तिम दिन मानते हुए इसे छुट्टी का दिन गिनते हैं। सप्ताह के बीच में कोई छुट्टी का दिन आ जावे, तब उस दिन को भी हम होलीडे कहते हैं, जबकि वास्तव में, सच्चाई कुछ और ही है। इसलिए इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए हम समझें कि होलीडे का असली अर्थ क्या होता है।

होलीडे *(Holiday)* को अंग्रेजी में इस तरह से भी लिखा जाता था - Holy day. चूंकि अंग्रेजी में जब दो शब्दों की संधि होती है, तब व्याकरण के अनुसार, पहले शब्द के अंत में यदि वाय (y) होता है तो बदलकर आई (i) हो जाता है। इसलिए Holy Day के दो शब्दों की संधि करने पर अंग्रेजी का एक शब्द (Holiday) बनता है। यह अंग्रेजों के लिए सप्ताह का पहला दिन, सबसे पवित्र दिन होता है, जिसका प्रयोग वे लोग चर्च जाकर यीशु मसीह और भगवान की प्रार्थना करने के लिए और साथ ही साथ अपने समाज के लोगों से भाईचारा एवं प्रेम बढ़ाने के लिए करते हैं। चूंकि अंग्रेज लोग जब रविवार को चर्च जाएंगे, तब उस दिन वे लोग अपने कार्यालय में प्रात: 10 बजे जाकर काम नहीं कर सकते थे। इसलिए रविवार के दिन सरकारी कार्यालयों को अंग्रेजों के जमाने से ही बंद रखने की प्रथा चल पड़ी थी। उस दिन हिन्दुस्तानी कर्मचारी भी ऑफिस नहीं आते, क्योंकि उनका ऑफिस नहीं खुलता था और इस तरह से हिन्दुस्तानियों को भी ऑफिस जाने से अपने आप छुट्टी मिल जाती थी। इसलिए अंग्रेजों के लिए तो रविवार का दिन होलीडे (पवित्र दिन) बना रहा और हिन्दुस्तानियों के लिए यह मात्र छुट्टी का दिन बन गया। इसके अतिरिक्त यदि ओर किसी दिन भी छुट्टी रहती है और कार्यालय बंद रहते हैं, तब उस दिन को भी हम होलीडे कहने लगे।

रविवार का अर्थ है सूर्य का दिन। जब सूर्य निकलता है तब पृथ्वी पर जीवन जगत की शुरुआत होती है। मनुष्य ही नहीं, कीट-पतंग, पशु-पक्षी सब जाग उठते हैं और जीवन शुरु हो जाता है। सप्ताह के सातों दिन में सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है- रविवार का, क्योंकि यह सूर्य की ऊर्जा से भरा-पूरा दिन होता है। इसलिए अंग्रेजों ने इसको सबसे अधिक पवित्र दिन मानते हुए, अपने भगवान को अर्पित कर दिया और इसी के परिणामस्वरूप एक समय वह था, जब यह कहावत चल पड़ी कि अंग्रेजों के साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नहीं होता। जब अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की आराधना करने के साथ यदि कोई अपने सप्ताह की शुरुआत करता है, तब आप कल्पना कर सकते हैं कि उस सप्ताह का वह व्यक्ति कितना अच्छा सदुपयोग कर सकेगा।

दुर्भाग्य से रविवार का जितना अच्छा सदुपयोग अंग्रेजों ने किया, उतना ही सर्वाधिक दुरूपयोग हिन्दुस्तानियों ने किया। हमने इसे छुट्टी का दिन मानकर आराम करने, देरी से उठने और अधिक देर तक बिस्तर पर पड़े रहने में खो दिया। दिन का बाकी समय भी फालतू के कामों में बिता दिया। कभी ताश खेलकर, कभी अन्य खेल-कूद में, कभी सिनेमा जाकर या घूमने-फिरने में ही इस महत्वपूर्ण दिन को खो दिया। यह जो भरपूर ऊर्जा वाला दिन है, उसे हम व्यर्थ ही खोते जा रहे हैं। यह दिन तो सबसे अधिक काम करने का दिन होता है, क्योंकि इस दिन जितनी अधिक शक्ति और ऊर्जा से हम भरपूर होते हैं, उतनी अधिक ऊर्जा दूसरे दिनों में नहीं होती है। इसे छुट्टी का दिन मानकर नष्ट करना हमारी सबसे बड़ी भूल है। होना तो यह चाहिए कि हम भी इस दिन को अपने मंदिरों में जाकर भगवान से प्रार्थना करें कि हम मानव समाज की सच्चे मन से सेवा कर सकें और दीन-दु:खियों की सेवा-सहायता करके उनके कुछ काम आ सकें। परन्तु यह सब करना बहुत कठिन कार्य है और रविवार को छुट्टी मनाकर समय नष्ट करना बहुत आसान काम है।

भारत को आजाद हुए 62 वर्ष हो गये परन्तु हमारी गुलामी की मानसिकता अभी तक नहीं बदली है और रविवार को सिर्फ आराम करके हमने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। पाश्चात्य सभ्यता की अंधी नकल करके हम पतन के रास्ते पर चले जा रहे हैं और हमें कोई यह भी बताने को तैयार नहीं है कि हम अंधेरे के गर्त से निकलकर उजाले में कैसे आ जाएं। मैंने अपने जीवन में सबसे अधिक कार्य प्रत्येक रविवार के दिन किया है तथा किसी भी रविवार को कभी नहीं खोया है। रविवार का अधिक से अधिक सदुपयोग करने का मुझे यह फल मिला कि मैं स्वावलम्बन का जीवन जीते हुए, अपने जीवन का भरपूर आनन्द ले रहा हूँ। मुझमें जो क्रियाशीलता बनी हुई है, उसका सबसे बड़ा कारण यही रहा है कि मैंने अपने जीवन में प्रत्येक रविवार का भरपूर उपयोग किया है और इसे कभी नष्ट नहीं होने दिया। इस कार्य में मुझे अपनी धर्मपत्नी डॉ. मीरा पाटोदिया और चिरंजीव - डॉ. अमित पाटोदिया और डॉ. भारत पाटोदिया का भी भरपूर सहयोग मिला, जिसके लिए मैं उनका आजीवन ऋणी रहूंगा।

आओ ! इस उजाले से भरे हुए दिन का, इस ऊर्जावान दिवस का, हम अपने जीवन में हमेशा स्वागत करें और क्रियाशीलता से भरपूर रविवार के दिन हम अधिक से अधिक काम निपटाएं और कोशिश करें कि हमारे बीते हुए सप्ताह के अधिक से अधिक पड़े हुए घर के पेन्डिंग काम, इस दिन पूरे कर सकें (क्योंकि सरकारी कार्यालय तो बन्द ही रहेंगे), जिससे कि हमारे सप्ताह के बाकी दिन भी बहुत उपयोगी और चिन्ता मुक्त बन सकें तथा हम अपने जीवन में उन्नति की राह पर लगातार आगे बढ़ते चले जाएं। सबका मंगल हो।

सत्यनारायण पाटोदिया

M.Com. (Silver Medalist), C.A.I.I.B., A.I.B. (London)
F.C.I.B. (London) A.C.B.I. (England), F.C.I. (London)
A.I.M.M., A.M.I.M.A., A.I.I.B. (Mumbai)

Director

Centre for Public Awareness & Information

मीरा अस्पताल

कर्तव्य

शिव मार्ग, बनीपार्क, जयपुर - 302 016
☎ 0141-2202220, 2202748 फैक्स : +91-141-2201261
www.indiandentist.in
www.meeradentalhospital.com
E-mail: dr_amit@meeradentalhospital.com
Mobile : 093148 77066